

सृजयी, सृजरी स्त्री. (तत्.) यजमान की दो पत्तिनयाँ।

सृकंडू स्त्री. (तत्.) कंडू रोग, खुजली की बीमारी।

सृक पुं. (तत्.) 1. हवा, वायु 2. कमल 3. तीर, बाण 4. वज्र 4. माला।

सृकाला पुं. (तद्.) शृंगाल, गीदड़, सियार।

सृक्कणी, सृक्किणी स्त्री. (तत्.) ओष्ठ का कोना, भीतर का या पिछला भाग।

सृक्व पुं. (तत्.) होंठों का छोर, मुँह का कोना।

सृग पुं. (तद्.) 1. बरछा, भाला, बाण 2. माला, हार।

सृगाल पुं. (तद्.) 1. शृंगाल, गीदड़, सियार 2. एक वृक्ष 3. एक दैत्य 4. दुष्ट, धूर्त 5. बुरे स्वभाव वाला या कटुभाषी मनुष्य, कायर आदमी 6. करवीर-पुर का राजा वासुदेव।

सृगाल कंटक पुं. (तद्. + तत्.) सत्यनासी का पौधा, भड़भाड़।

सृगाल कोलि पुं. (तद्. + तत्.) एक प्रकार का बेर।

सृगाल घंटी स्त्री. (तत्.) ताजमखाना।

सृगाल वदन पुं. (तत्.) एक राक्षस, एक असुर।

सृगाल वास्तुक पुं. (तत्.) एक प्रकार का बथुवा। (बथुआ)।

सृगाल विभा स्त्री. (तत्.) पृश्निपर्णी, पिटवन।

सृगाली स्त्री. (तद्.) 1. गीदड़ी, लोमड़ी 2. पलायन 3. दंगा 4. बिदारी कंद 5. कोकिलाक्ष।

सृग्विनी स्त्री. (तद्.) 1. मादा सियार, गीदड़ी 2. सग्विणी छंद।

सृजक पुं. (तत्.) 1. रचने या निर्माण करने वाला; निर्माता, रचयिता 2. सृष्टि का रचयिता, स्रष्टा, सर्जक।

सृजन पुं. (तत्.) 1. रचना, निर्माण, सर्जन 2. जन्म, उत्पत्ति 3. संसार की रचना, सृष्टि।

सृजनशील वि. (तत्.) रचनाशील, रचना करते रहने वाला, जो निरंतर रचना या निर्माण करता रहता हो।

सृजनहार पुं. (तत्.) 1. रचना करने वाला 2. उत्पत्ति करने वाला 3. निर्माता 4. जन्म देने वाला 5. सृष्टि का रचयिता।

सृजना स.क्रि. (तद्.) 1. निर्माण करना, रचना करना, रचना बनाना 2. उत्पन्न करना, जन्म देना 3. विश्व की रचना करना।

सृजानात्मक वि. (तत्.) 1. रचनात्मक, सर्जनात्मक, निर्माणात्मक 2. जिसे कल्पनाशक्ति के योग से बनाने वाले द्वारा नए रूप में प्रस्तुत किया गया हो।

सृजनात्मक कृति स्त्री. (तत्.) अपनी कल्पना शक्ति द्वारा रचनाकार जिसे कलात्मक या साहित्यिक रचना का रूप देकर नवीन रूप में प्रस्तुत करता हो, सर्जनात्मक कृति।

सृजया स्त्री. (तत्.) नील मक्षिका।

सृजि क्रि.वि. (तत्.) 1. बनाकर, रचकर, सृजन करके 2. सृष्टि की रचना करके 3. उत्पन्न या पैदा करके।

सृणका स्त्री. (तत्.) दे. सृणीका।

सृणि पुं. (तत्.) 1. शत्रु 2. चंद्रमा 3. हाथी का अंकुश।

सृणीका स्त्री. (तत्.) थूक, लार।

सृत वि. (तत्.) 1. खिसका या सरका हुआ 2. जो चला गया हो 3. गत 4. विचलित पुं. (तत्.) गमन, पलायन।

सृता स्त्री. (तत्.) 1. खिसकी या सरकी हुई 2. पलायन या गमन की हुई स्त्री या वस्तु आदि।

सृति स्त्री. (तत्.) 1. सरकने या खिसकने की स्थिति या अवस्था 2. चोट पहुँचाना 3. निर्माण 4. जन्म 5. गमन 6. मार्ग।

सृत्वन पुं. (तत्.) 1. सृत्वा, स्रष्टा, प्रजापति 2. बुद्धि 3. सरकने की क्रिया या स्थिति 4. विसर्प।

सृत्वर वि. (तत्.) गमनशील, जो चलने-फिरने वाला हो।